om 24 final Delhi_Page 1 and 2 18/03/2015 10:54 Page 11

होली .....है...'आध्यात्मिक रहस्य'

होली का त्योहार भारत के मुख्य त्योहारों में से है। परन्तु आज इस त्योहार का रूप अपने आदिम रूप से बिल्कुल ही बदला हुआ है। वास्तव में तो यह एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक त्योहार था, परंतु आज इसे मनाते समय ज्ञान-ध्यान को एक तरफ रखकर हुल्लड़बाज़ी को ही प्रधानता दी जाती है जिसे देखकर बहुत-से शिष्ट लोगों के मन में इस त्योहार के प्रति घृणा पैदा हो गई है। अत: आवश्यकता है कि हम होली के आध्यात्मिक रहस्यों को जानें क्योंकि इनको जानने से मनुष्य को जीवन-मार्ग की दिशा मिल सकती है।

होली के आध्यात्मिक रहस्य

होली का त्योहार शिवरात्रि के बाद, फाल्गुन पूर्णिमा के दिन आता है और लोग इसे प्राय: चार प्रकार से मनाते हैं। 1) वे एक-दूसरे पर रंग डालते हैं, 2) अन्तिम दिन होलिका जलाते हैं, 3) मंगल-मिलन मनाते हैं और 4) कई लोग झूले में श्रीकृष्ण (श्री नारायण) की झांकी भी सजाते हैं। होली को मनाने की तिथि और उपर्युक्त चार रीतियों पर ध्यान देने से होली के वास्तविक रहस्यों को सहज ही समझा जा सकता है।

भारत में, देशी वर्ष फाल्गुन की पूर्णमासी को समाप्त होता है। इसलिए, फाल्गुन की पूर्णमासी की रात्रि को होलिका जलाने का अर्थ पिछले वर्ष की कटु और तीखी स्मृतियों को जलाना, अपने दु:खों को भुलाना और हँसते-खेलते नये वर्ष का आह्वान करना है। अत: उत्तर प्रदेश में कई लोग 'होलिका दहन' को 'संवत जलाना' भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त, पुराने वर्ष के अंत में इस त्योहार का मनाया जाना वृहद् दृष्टि में इस रहस्य का भी परिचय देता है कि यह त्योहार पहले-पहले कल्प अथवा कलियुग के अंत में मनाया गया था जिसके बाद सतयुग के सुख-शान्ति के दिन शुरु हुए थे। कलियुग के अंत में होलिका जलाने से मनुष्य के दु:ख, दरिद्रता और वासना तथा व्यथा सब दूर हो गये थे। परंतु प्रश्न उठता है कि होलिका जलाने से मनुष्य के विकार और विकर्म तथा दु:ख और क्लेश भला कैसे नाश हो सकते हैं?

स्पष्ट है कि लकड़ियाँ तथा गोबर जलाना ही 'होलिका दहन' नहीं है। लकड़ियों और गोबर को तो आज भी भारत के देहातों में रोज़ जलाया जाता है, परंतु यहाँ दु:ख और दरिद्रता तथा अपवित्रता का प्रज्वलन तो हुआ नहीं है बल्कि दिनोंदिन इनमें वृद्धि ही हो रही है। अत: विचार करने पर आप मानेंगे कि योगाग्नि प्रज्वलित करने से ही हमारी पुरानी कटु स्मृतियाँ मिट सकती हैं, हमारे दु:ख दूर हो सकते हैं और आने वाले नये वर्ष में हमारे जीवन में आनंद और उल्लास आ सकता है। इसलिए, होलिका के दिन गोबर और घास-फूस को अग्नि की ज्वाला में जलाना वास्तव में मन की ऊबड़-खाबड़ अथवा दूषित वृत्तियों को योगाग्नि द्वारा भस्मसात करने की प्रेरणा देता है। इसी कारण इस त्योहार को कई लोग 'राक्षस विनाशक त्योहार' भी मानते हैं क्योंकि यह माया रूपी राक्षसी को ज्ञान रूपी हो-हल्ले से भगाने का त्योहार है।

'होलिका' शब्द का अर्थ

कई लोगों का कहना है कि 'होलिका' शब्द का अर्थ है - 'भुना हुआ अन्न'। होलिका के अवसर पर लोग अग्नि में अन्न डालते हैं और गेहूँ और जौ की बाली को भुनते हैं। योगियों की बोल-चाल में ज्ञान अथवा योग को अग्नि से उपमा दी जाती है क्योंकि, जैसे भुना हुआ बीज आगे उत्पत्ति नहीं कर सकता वैसे ही ज्ञान-युक्त और योग-युक्त अवस्था में किया गया कर्म भी अकर्म हो जाता है, अर्थात् वह इस लोक में विकारी मनुष्यों के संग में फल नहीं देता। अत: 'होलिका' शब्द भी हमें इस बात की स्मृति दिलाता है कि परमपिता ने पुरानी सृष्टि के अंत में मनुष्यों को ज्ञान-योग रूपी अग्नि द्वारा कर्म रूपी बीज को भूनने की जो सम्मति दी थी, हम उस पर आचरण करें। चन्द लकड़ियों और उपलों को इकट्ठा करके जलाने को ही हम होली न मान लें बल्कि योगाग्नि में अपने पुराने एवं खराब संस्कारों को दग्ध करें और आगे के लिए कर्मों को ज्ञान-युक्त होकर करें।

होली पर रंग

होली के अवसर पर एक-दूसरे पर रंग डालने की प्रथा भी इसी भाव को व्यक्त करती है। जैसे ज्ञान के अन्य अनेक नाम 'अंजन, अमृत, अग्नि' इत्यादि हैं, वैसे ही ज्ञान को 'रंग' भी कहा गया है। ज्ञानी मनुष्य अपने संग से दूसरों पर भी ज्ञान का रंग चढ़ाता है, उनकी आत्मा रूपी चोली को भी परमात्मा की लाली में लाल करता है। जब तक मनुष्य स्वयं भी ज्ञान में न रंगा जाये और दूसरों पर भी ज्ञान-वर्षा न करे तब तक वह आनंदित तथा प्रफुल्लित नहीं हो सकता और तब तक परमात्मा से उसका मंगल-मिलन भी नहीं हो सकता। अत: आज एक-दूसरे पर रंग डालने तथा छोटे-बड़े, परिचित-अपरिचित सभी से प्रेमभाव से मिलने की जो रीति है, इसका शुरु में यही रूप था कि परमपिता परमात्मा शिव से ज्ञान प्राप्त करके मनुष्यों ने ज्ञान-पिचकारी से एक-दूसरे की आत्मा रूपी चोली को रंगा था और एक-दूसरे के प्रति मन-मुटाव तथा मलीन भाव त्याग कर मंगलकारी परमात्मा शिव से मंगल-मिलन मनाया था। ज्ञान के बिना मनुष्य भला मंगल-मिलन मना ही कैसे सकता है? अज्ञानी और मायावी मनुष्य तो अपने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि राक्षसी स्वभावों से दूसरों का अमंगल करता है, उनके अधोपतन का निमित्त कारण बनता है; वह मंगल-मिलन तो तभी मना सकता है जब ज्ञान अबीर में आत्मा को रंगे और पुराने विचारों, आचारों और समाचारों को तथा मनोविकारों को योग की अग्नि का ईंधन बना दे।

झूले में श्रीकृष्ण जी की झांकी

ऊपर बताई गई रीति से होली मनाने से ही मनुष्य को श्रीकृष्ण जी की झांकी दिखाई देगी। आजकल होली के उत्सव पर वैष्णव लोग झूले में श्रीकृष्ण (श्री नारायण) की झाँकी सजाकर उसके दर्शन मात्र को ही पर्याप्त समझते हैं। उनका यह विश्वास है कि – ''इस दिन जो व्यक्ति झूले में झूलते हुए श्रीकृष्ण जी के दर्शन करता है, वह वैकुण्ठ में देव-पद का भागी बनता है। वह वैकुण्ठ में भी श्रीकृष्ण जी का निकटस्थ प्राप्त करता है अथवा वहाँ भी उसे उनके साथ झूलने का सौभाग्य प्राप्त होता है।'' परन्तु विचार कीजिए कि श्रीकृष्ण तो पूर्ण पावन हैं और आज का मनुष्य पूर्ण रूप से पतित है; तो अब दर्शन मात्र से वैकुण्ठ में दोनों का इकट्ठा निवास कैसे हो सकता है? इस प्रकार के दर्शन-मात्र से आज तक कितने मनुष्यों को वैकुण्ठ का सुख मिला है? वास्तव में 'दर्शन' का अर्थ 'ज्ञान' अथवा पहचान है। **अत: श्रीकृष्ण जी के दर्शन का मतलब है** – 'श्रीकृष्ण जी की जीवन-कहानी का वास्तविक ज्ञान।' जो मनुष्य स्वयं को ज्ञान के रंग में रंगता है और सच्चा वैष्णव बनता है, उसे तो वैकुण्ठ में झूलते हुए श्रीकृष्ण के दर्शन होते ही हैं। उसकी आँख तो इस कलियुगी दुनिया से हट जाती है और वैकुण्ठ पर ही लगी रहती है। वह तो इस दुनिया में रहते हुए भी मानो नहीं रहता बल्कि वैकुण्ठ में श्रीकृष्ण को झूलता देखता है। इतना ही नहीं, वह तो स्वयं भी ज्ञान-आनंद के झूले में झूलता है। जो एक बार उस झूले में झूलता है, उसे विषय-विकार फिर अपनी ओर आकर्षित नहीं करते। उसके लिए होली का उत्सव 'मल-उत्सव' नहीं है, मंथन (ज्ञान-मंथन) उत्सव है।

मेरठ। त्रिमूर्ति शिव जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के दौरान विधायक रविन्द्र भदाना को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बीना तथा ब्र.कु. प्रभा मिश्रा।

अमेठी-उ.प्र.। डी.एम. तथा एस.पी. के सेवाकेन्द्र में आने पर ज्ञानचर्चा के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुमित्रा तथा ब्र.कु. सुदामा।

कायमगंज-उ.प्र.। शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में आये हुए अतिथियों चेयरमैन रीता गंगवार, डॉ. बी.के. गुप्ता, दिनेश राठौर, दिनेश गंगवार व जयकिशन गुप्ता को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मिथलेश।

मदनगंज-राज.। महाशिवरात्रि पर निकाली गई आध्यात्मिक रैली के दौरान शिव संदेश देने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. शांति व अन्य।

सहरसा। 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. रानी, निदेशिका बिहार सेवाकेन्द्र। मंचासीन हैं एस.डी.ओ. राजेश कुमार, जिला व सत्र न्यायाधीश डॉ. कुमार देवदत्त, तनाव प्रबंधन विशेषज्ञ पूनम बहन,इन्दौर, विधायक आलोक रंजन, सिविल सर्जन डॉ. भोलानाथ झा व अन्य।

पूर्वी चम्पारन-विहार। महाशिवरात्रि पर शिव संदेश लिए हुए निकाली गई रथ यात्रा को हरी झंडी दिखाते हुए ब्र.कु. रानी। साथ हैं पूर्व मंत्री एवं गाँधी संग्रहालय सचिव ब्रज किशोर जी, ब्र.कु. अशोक तथा अन्य।

दिल्ली-जैतपुर। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए सुमन ओझा,एडीटर,खबरों का भंडार, नरसिंह शाह,समाजसेवक, ब्र.कु. उषा, विधायक नारायण दत्त शर्मा, ब्राह्मण सभा अध्यक्ष दिब्बन लाल शर्मा, जय भारती पब्लिक स्कूल के चेयरमैन नंदलाल गाबा व अन्य।